पुरुषों के लिये प्रमेह और स्त्रियों के लिये प्रदर ये दोनों व्याधियाँ बहुत खतरनाक हैं। ये ऐसे दारुण रोग हैं कि जवानी में ही बुढ़ापा लाकर शरीर को जर्जर बना देते हैं। जीवित रहते हुए भी मनुष्य मुर्दा (निर्जीव) सा बन जाता है। इस रोग की प्रकोपावस्था में शरीर कान्तिहीन हो जाता तथा खून की कमी होने से शरीर का रंग पीला हो जाता है। स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाना, किसी की बात अच्छी नहीं लगना, अग्निमांद्य, हाथ-पैर और आँखों में जलन, थोड़ा भी चलने पर हृदय की गति बढ़ जाना, पेट में भारीपन, स्राव गर्म और जलसदृश पतला होना आदि लक्षण होने पर प्रदरान्तक रस के सेवन से बहुत लाभ होता है। इसके साथ मधूकाद्यवलेह दूध के साथ देने से और भी विशेष लाभ होता है। इसके सेवन-काल में रक्त-प्रदर की व्याधि में अशोकारिष्ट का सेवन करना तथा श्वेतप्रदर में पत्रांगासव या चन्दनासव का भोजनोत्तर समभाग जल में मिलाकर सेवन करने से शीघ्र एवं उत्तम लाभ होता है।

प्रदररिपु रस

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, नागभस्म—प्रत्येक 1-1 तोला, रसौत 3 तोला, लोध्र चूर्ण 6 तोला लें। प्रथम पारा तथा गन्धक की कज्जली बनावें, फिर उसमें अन्य औषधियाँ मिलाकर सबको एक दिन वासा-रस में घोंटकर 2-2 रत्ती की गोलियाँ बना, सुखा कर रख लें।

—यो. र.

वक्तव्य

रसौत में मिट्टी मिली होती है अतः अठगुने जल में घोलकर, छानकर गाढ़ा कर लेना चाहिए या दारु हल्दी के क्वाथ से स्वयं रसौत बनाकर प्रयोग करें।

मात्रा और अनुपान

1-2 गोली सुबह-शाम खूनखराबी 1 माशा और मधु से चटाकर ऊपर से चावल का पानी या अशोक की छाल का क्वाथ पिलाना चाहिए।

गुण और उपयोग

जैसे पुरुष को शुक्रपात विशेष होने से शुक्र पानी जैसा पतला होकर बहने लगता है, वैसे ही स्त्रियों को भी अधिक दिनों तक प्रदर की शिकायत होने से रज पानी जैसा पतला हो स्राव होने लगता है और यह स्राव बिना मालूम पड़े भी हो जाता है, जैसे निद्रावस्था में या कहीं बैठे-बैठे ही अथवा ज्यादा चलने-फिरने आदि से भी हो जाता है और वह रुग्णा को मालूम भी नहीं पड़ता है। इसमें गर्भाशय बहुत कमजोर हो जाता है। बद्धकोष्ठता होने में पेट से मल संचय होता है। ऐसी अवस्था में इस रसायन के साथ बंग भस्म मिलाकर देने से शीघ्र लाभ होता है। बद्धकोष्ठता दूर करने के लिए कुमार्य्यासव या पत्रांगासव 1।। तोला बराबर जल मिलाकर देना चाहिए। बढ़े हुए प्रदर में अर्थात् जिस समय रक्त का प्रवाह जोरों से हो उस समय इसका प्रयोग करना चाहिए तथा भोजनोत्तर अशोकारिष्ट 2 तोला में समान भाग जल मिलाकर पिलाना विशेष लाभदायक है।

प्रमेहगजकेशरी रस

बंग भस्म, सुवर्ण भस्म, कान्त लौह भस्म, पारद भस्म या (रस-सिन्दूर), मोती भस्म या मोती पिष्टी, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात और नागकेशर का चूर्ण समान भाग लेकर सबको एकत्र मिला, घृतकुमारी के रस में घोंटकर 1-1 रत्ती की गोलियाँ बना, सुखा कर रख लें।

—र. सा. सं.

वक्तव्य

ग्रंथ के मूलपाठ के अनुसार इसकी दो-दो माशे की गोलियाँ बनाने का उल्लेख है, किन्तु स्वर्ण, मोती, रससिन्दूर, लौह भस्म और बंग भस्म के सम्मिश्रण से बनने वाले इस बहुमूल्य एवं तीक्ष्ण प्रभावशाली योग की मात्रा अत्यधिक है—अतः एक-एक रत्ती परिमाण की गोलियाँ बनाना उचित है। मात्रा में एक से तीन गोली तक दी जा सकती है।

दूसरा

लौह भस्म, नाग (सीसा) भस्म, बंग भस्म—प्रत्येक 1-1 तोला, अभ्रक भस्म 4 तोला, शुद्ध शिलाजीत 5 तोला और गोखरू 6 तोला लें। सबको एकत्र मिलाकर नींबू के रस में 7 दिन खरल कर 1-1 रत्ती की गोलियाँ बना लें।

—र. वि.

मात्रा और अनुपान

1 से 2 गोली दिन में दो बार जल या गुड़मार बूटी के क्वाथ से दें।

गुण और उपयोग

यह रसायन प्रमेह, मधुमेह, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी और दाह आदि को नष्ट करता है। शुक्रस्राव को केवल 3 दिन में ही रोक देता है। इसके सेवन से मधुमेह में शर्करा की मात्रा कम होती है। इसके द्वारा अग्न्याशय की विकृतिजन्य पाचन-क्रिया की न्यूनता से शारीरिक धातु-उपधातुओं की विकृति दूर हो जाती है और अग्न्याशय सबल होने पर शर्करा की अधिक उत्पत्ति नहीं होती है।

मधुमेह में होने वाले अधिक पेशाब, प्यास, मुँह सूखना, भूख अधिक न लगना, आँखों के सामने अंधेरा छा जाना, भ्रम होना, कानों में आवाज होना, बेचैनी, सिर-दर्द आदि लक्षण होने पर यह रस बहुत फायदा करता है। मधुमेह में वात प्रकोप के कारण सर्वांग में दर्द, रक्तवाहिनी नाड़ियों में वात-प्रकोप होना, कलाय खंज (लंगड़ापन), चलने में पाँव काँपना, शरीर में सन्धियों की शिथिलता तथा उनमें अधिक दर्द होना, इन लक्षणों में इस दवा के उपयोग से बहुत फायदा होता है।

पुराने मूत्रकृच्छ्र रोग में इसका उपयोग किया जाता है। इसमें मूत्र का वेग तो मालूम पड़ता है, किन्तु मूत्राशय से लेकर मूत्रनली के बीच किसी चीज की रुकावट हो जाने से पेशाब खुलकर न होकर कठिनता से थोड़ी-थोड़ी मात्रा में होता है। कठिनता से पेशाब होने के कारण ही इस रोग का नाम "मूत्रकृच्छ्र" पड़ा है। पुराने सूजाक वाले रोगियों को अक्सर यह रोग हो जाया करता है। इसमें सुवर्ण बंग के साथ इस रसायन का प्रयोग करने से फायदा होता है। दूसरे योग की अपेक्षा प्रथम योग विशेष प्रभावशाली है—किन्तु प्रमेह अथवा मधुमेह में द्वितीय योग विशेष गुणकारी है, इसके सेवन से इन्शुलीन जैसा प्रभाव होता है।

प्रवाल पंचामृत रस

प्रवाल पिष्टी या भस्म 2 तोला, मोती पिष्टी या भस्म, शंख भस्म, मुक्ता शुक्ति भस्म या पिष्टी, कौड़ी भस्म—प्रत्येक 1-1 तोला लेकर सबको एकत्र मिलाकर उसमें सबके बराबर (5 तोले) आक का दूध डालकर 1 दिन घोंटकर गोला बना, सराबसम्पुट में बन्द करके गजपुट में फूँक दें। स्वांग-शीतल होने पर उसमें से भस्म को निकाल, पीस करके सुरक्षित रख लें।

—यो. र.

नोट

आक (अर्क) दुग्ध के पुट देने से इसमें कुछ उग्रता आ जाती है। अतएव कोई-कोई वैद्य इसे गो-दुग्ध में खरल करने की सलाह देते हैं। एक बार पुट देने से रङ्ग स्वच्छ-सफेद न आये तो एक-दो पुट और देकर रङ्ग सफेद बना लेना चाहिए।

मात्रा और अनुपान

1 से 2 रत्ती सुबह-शाम। गुल्म तथा उदर रोगों में पुनर्नवा-क्वाथ के साथ दें। पित्त प्रधान रोगों में सितोपलादि चूर्ण और मधु अथवा गुलकन्द या आँवला के मुरब्बा के साथ तथा कास-श्वास में अदरक-रस और मधु के साथ दें।

गुण और उपयोग

पित्ताशय, क्लोम, यकृत् और प्लीहा के कार्यों पर इसका खास प्रभाव पड़ता है। यह तीक्ष्ण, क्षारीय और शीतवीर्य है। अतः कफ और पित्तजन्य रोगों में अधिकतर उपयोग किया जाता है। इस रसायन के सेवन से गुल्म, प्लीहा, आनाह (पेट फूलना), उदर रोग, खाँसी, अग्निमांद्य, कफ और वातज रोग, अजीर्ण, डकारें ज्यादा आना, हृद्रोग, ग्रहणीविकार, अतिसार, प्रमेह, मूत्र-दोष, मूत्रकृच्छ्र और अश्मरी आदि रोग दूर होते हैं। सभी प्रकार के गुल्म रोगों में विशेषतः रक्तगुल्म में यह उत्तम गुणकारी महौषधि है। गुल्म कुठार रस या गुल्म कालानल रस, कांकायन बटी, सूरण बटक आदि के साथ इसका प्रयोग करना चाहिये।

यह पित्त के विकारों को ठीक करता और उसकी विकृति से उत्पन्न होने वाले उपद्रवों—आन्त्र-प्रदाह, गले में जलन, जलन के साथ दस्त होना, आँव से पैदा हुई संग्रहणी आदि को भी यह नष्ट करता है। इसके सेवन से हृदय और मस्तिष्क को बल मिलता तथा फुफ्फुस में रुके हुए दोष भी निकल जाते हैं।

जहाँ कहीं मन्दज्वर के साथ शुष्क—साधारण कास (खाँसी) हो अथवा ज्वरादिक किसी प्रकार के उपद्रव न होते हुए भी शरीर दिन-प्रतिदिन दुर्बल हो रहा हो, तो ऐसी अवस्था में यह रसायन बहुत फायदा करता है। ज्वर बराबर रहता हो, साथ में शुष्क कास-श्वास, पसली में दर्द आदि लक्षण हों तो प्रवाल पंचामृत मृगशृङ्ग भस्म 1 रत्ती के साथ प्रयोग किया जाता है। यक्ष्मा में—अधिक ज्वर रहना, खाँसी भी अधिक होना, कफ दुर्गन्धयुक्त निकलना, पसीना ज्यादा आना, विशेषकर प्रातःकाल पसीना ज्यादे आना, प्यास ज्यादा, कमजोरी आदि लक्षणों में गुडूची सत्त्व 1 रत्ती, सुवर्ण भस्म 1/4 रत्ती के साथ इस रसायन का सेवन करना चाहिए। प्रसव के बाद स्त्रियों की दुर्बलता दूर करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

कफ प्रकोपजन्य मूत्रकृच्छ्र में इस रसायन का उपयोग चावल के धोवन (पानी) के साथ करना चाहिए। बद्धकोष्ठ में आँतों की कमजोरी के कारण ही प्रायः मलबन्ध हो जाया करता है। ऐसी दशा में रससिन्दूर 1 रत्ती, कुटकी चूर्ण 4 रत्ती, आठ नग दाख, हरीतकी चूर्ण 1 माशा के साथ इसे मिलाकर गर्म जल या गर्म दूध के साथ सेवन करने से बहुत शीघ्र लाभ होता है। मूत्रकृच्छ्र रोग में—गोखरू क्वाथ के साथ बहुत फायदा होता है। रात्रि में अधिक पसीना आने पर वंशलोचन और मधु के साथ दिन भर में 3 बार इसके सेवन से लाभ होता है। बच्चों की तेज खाँसी में अभ्रक भस्म आधी रत्ती, रससिन्दूर चौथाई रत्ती, कंटकारि क्षार 1 रत्ती में मिलाकर मधु के साथ देने से लाभ होता है। छोटे-छोटे बालकों के ज्वर, कास अथवा श्वास